कल तक तो खाने का पता नहीं था आज नगरी जिमाऐगे ।फिर भी लोग आए और ठाठ से जीमें। नगरी खिला दी तब भी चरू पूरा ही भरा था। राजा को पता लगा तो बुढ़िया को बुलाया और कहा, 'क्यों बुढ़िया ऐसा चरू तेरे घर अच्छा लगे या हमारे घर।' बुढ़िया ने कहा, 'राजाजी आप ले लो ।' राजाजी ने खीर का चरू महल में मंगा लिया।लाते ही खीर में कीड़े - मकोड़े, बिच्छू, कन्सले हो गए और दुर्गंध आने लगी। राजा जी ने कहा,'बुढ़िया चरू वापस ले जा, जा तुझे हमने दिया।'बुढ़िया ने कहा, 'राजाजी आप देते तो पहले भी कभी देते यह चरा तो मुझे मेरे गणेश जी ने दिया है ।'बुढ़िया ने चरा वापस लिया ।लेते ही सुगंधित खीर हो गई । घर आकर बुढ़िया ने गणेश जी से पूछा,'बची हुई खीर का क्या करूं ?' गणेश जी ने कहा,'झोपड़ी के कोने में खड्डा खोदकर गाढ़ दे उसी जगह सुबह उठकर वापस खोदेगी तो धन के दो चरे मिलेंगे ऐसा कहकर गणेश जी अंर्तध्यान हो गए और जाते समय झोपड़ी को लात मारते हुए गए तो झोपड़ी के स्थान पर महल हो गया।सुबह बहू ने फावड़ा लेकर पूरे घर को खोद दिया तो कुछ भी नहीं मिला। बहू ने कहा,'सासू जी थारो गणेश जी तो झूठो है।' सास ने कहा,' बहू म्हारो गणेश झूठो तो नहीं है।ला मैं देखूं।' वह सुई लेकर खोदने लगी तो टन–टन करते दो धन के चरे निकल आए। बहू ने कहा,' सासू जी गणेश जी तो साचो ही है।' सास ने कहा,' गणेश जी तो भावना के भूखे हैं ।'हे ! गणेश जी जैसा तुमने बुढ़िया को दिया वैसे सबको देना कहानी कहने वाले, हुंकारा भरने वाले, कहानी सुनने वाले सबको देना।

विनायक जी की कहानी

चिमटी भर चावल, चुल्लू भर दूध लेके विनायक जी लड़के का भेष धर के नगरी में घूमने लगे बोले कोई मांई खीर बना दे ।सब हँसने लगे व बोले, मजाक करता है और कोई तैयार नहीं हुआ।एक बुढ़िया बोली, ला बेटा मैं बना दूं। उसने भगोनी चढ़ाई व खीर बनाने लगी। लड़का बाहर चला गया और उधर खीर तो उफनने लगी ।बड़े से बड़ा